बौद्ध साहित्य में वर्णित लोक जीवन की वास्तविक अवधारणाएँ : एक अनुशीलन

राहुल कान्त कुमार

लोक जीवन के वास्तविक अवधारणाओं में बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण योगदान है। ऐसा नहीं है कि ये अवदान सर्वथा बौद्ध साहित्य में ही परिलक्षित होती है अपितु ये अवधारणाएं संस्कृति के चरणवद्धता का एक सांगोपांग अध्ययन है, परन्तु लोक जीवन के जिस पक्ष को बौद्ध धर्मावलम्बियों ने नई परिभाषा से परिभाषित किया। वह निःसन्देह एक नई यात्रा पथ का सृजन करती हुई नजर आती हैं संस्कृति के इन वृहत्तर आयामों को कई कारकों के रूप में रेखांकित कर अध्ययन किया जाता है। अगर हम देखें तो बौद्ध साहित्य द्वारा महात्मा बुद्ध के समय के वस्त्रों और परिधान के सम्बन्ध में समुचित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार जब बुद्ध वैशाली नगरी गये, तो वहाँ के नागरिकों ने रंग–बिरंगे वस्त्र पहन कर उनका स्वागत किया। वे ऐसे वस्त्र पहने हुए थे, जो उनके शरीर के रंग से मेल खाते थे। सांवले रंग के लोगों ने गहरे नीले रंग के वस्त्र और आभूषण पहने हुए थे, और गौर वर्ण के लोगों ने हल्के रंग के कपड़ों और आभूषण को धारण किया हुआ था। सिरिकाल–कण्णि जातक में एक युवती का वर्णन है जिसका नाम 'कालकझिण' था। जब वह एक श्रेष्ठि से मिलने के लिये गई, तो उसने नीले रंग के वस्त्र धारणा किये थे और नीलमणियों से ही अपना शृंगार किया था। सर्वसाधारण पुरुषों के परिधान में प्रायः दो वस्त्र हुआ करते थे, उत्तरीय (दुपट्टा) और अन्तरवासक (अधोवस्त्र या धोती) सम्पन्न वर्ग के श्रेष्ठि सदृश लोग सिर पर उष्णीण (पगड़ी) भी बाँधा करते थे। स्त्रियां अधोवस्त्र के रूप में साड़ी पहनती थीं और कटि के उपर कंचुक (चोली)। उत्तरीय को वे चादर के समान ओढ़ा करती थीं। इस युग के परिधान का अनुमान उन मूर्तियों से भी किया जा सकता है, जो पाटलिपुत्र, सांची और भरहुत आदि में उपलब्ध हुई है। दीदारगंज की यक्षिणीमूर्ति में यक्षिणी की साड़ी एड़ी तक पहुंची हुई हैं, और उसके आगे एक बटा हुआ दुपट्टा लटक रहा है। यह मूर्ति मौर्य काल की है, पर बौद्ध की स्त्रियों का परिधान भी प्रायः ऐसा ही होता होगा, इस कल्पना को असंगत नहीं कहा जा सकता है।